e-ISSN:2582 - 7219

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

IN SCIENCE, ENGINEERING AND TECHNOLOGY

Volume 4, Issue 6, June 2021

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 5.928

International Journal Of Multidisciplinary Research In Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 5.928

| Volume 4, Issue 6, June 2021 |

शिरोमणि निबंधकार संसारचंद्र

Suman Rani Makkar

Associate Professor in Hindi, Swargiya Pandit Nawal Kishore Sharma Government P. G. College, Dausa, Rajasthan, India

सारांश: हरियाणा साहित्य अकादमी दुआरा 2007 के हरियाणा साहित्य रत्न पुरस्कार से सम्मनित हस्य व्यंग्य निबंधकार डॉ. संसारचंद्र का जन्म जम्मू कश्मीर के प्रमुख जिले मीरापुर नगर में 28 अगस्त 1917 को हुआ।फिर एमए, पीएचडी तथा डिलीट की उपाधी भी की।५० से भी ज्यादा पुस्तके लिखी। डॉ. संसार चंद्र को महाराष्ट्र सरकार ने चक्कलस अवार्ड,पंजाब सरकार की की ओर से शिरोमणि साहित्यकार अवार्ड तथा हरियाणा सरकार की ओर से साहित्य रत्न अवार्ड से नवाजा गया है।कुछ महात्वपूर्ण हस्य व्यंग्य निबंध है:-

1. सतक सीताराम
2. सोने के दांतो
3. अपनी डाली के कांटे
4. बातें ये झूठी हैं

प्रमुख समीक्षत्मक कार्य हैं :

1. आकलन और समीक्षा
2. साहित्य अनुभूति और विवेचन
3. हिंदी काव्य में अन्योक्ति

हिंदी निबंध और काव्य में लेखक मनोविनोद कर सकता है। किसी का भी मजाक उड़ा सकता है। संसारचंद का कहना है " अरे लोगो तुम मेरी तरफ देखो! मैं संसार में तुम्हारा उधार करने के लिए आया हूं ... बुराइयो का नाश करने के लिए खुदा ने मुझे नीचे भेजा है।"

परिचय

यदी कबीर या तुलसी आज होते तो उन के समान्य साधना में स्थानीय बसो का सर्वोपरि स्थान मिलता , आज से बढ़कर लोक-संग्रह की धर्म निर्पेक्षता और गणतंत्रात्मक मंच अन्य कहीं नहीं मिला।

संसारचंद्र ने अपने निबन्धो में हरदिन जीवन के अनेक स्थितियो, विसंगतियो, निरिहितो, सीमाओ, सामान्य विषयो अवं घटनाओ को लेकर लिखा है। लेखक ने भारत की रजनीति, नेता, पंडित, मुल्ला, पूंजीपति, आदि पर भी हास्य वर्षा की है। संसारचंद्र ने हिंदी साहित्य और समीक्षा को अनुपम योगदान दिया है। उनके निबन्धो को व आलोचनात्मक कृतियों को विस्मृत नहीं किया जा सकता।

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 5.928

| Volume 4, Issue 6, June 2021 |

निबंधो में एक या शास्त्र विवेक के आधार पर परिचय मिलता है तो दूसरी तरह उनमे प्रभावत्माक आशा भी विद्यामन रहती है। उनका स्थान निबंध परंपरा में आगे रहा है व रहेगा। संसारचंद्र जीवन के यथार्थ धरातल पर अनेक आभावो से पीड़ित हुए। अनेक प्रकार की परिस्थियों पर भी व्यकुल नहीं हुए। उनका हस्य व्यंग्य का रंग बिरंगी रेशमी विभा से युक्त होता । डा.संसार ने सभी भाषाओं के साहित्य में एक बड़ा योगदान दिया है। वे एक सर्वश्रेष्ठ साहित्कार व रचनाकार होने के साथ ही एक अच्छे इंसान भी थे। उन्हें ज्योतिष विद्या का भी काफी अधिक ज्ञान था। वे एक ऐसे लेखक थे जिन्होंने हिंदी, उर्दू,पंजाबी ,अंग्रेजी व डोगरी में सर्वश्रेष्ठ साहित्य की रचना की।

विचार-विमर्श

उनका स्वभाव भी मीठा था और उन्होंने मामूली व्यक्तियों को भी ऊंचाई तक पहुंचाया। वे एक आदर्शवादी,व्यवहारिक व व्यंग्यकार भी थे। उनके जाने से साहित्यजगत को काफी क्षति पहुंची है। वे पंजाब में हिंदी के लिए व्यापक अकेड़ाि्क साहित्यकार थे। डॉ. संसार चंद्र अपने पीछे पत्नी,दो पुत्र और एक पुत्री छोड़ गए हैं। सन 1948-63 तक वे एसडी कालेज अंबाला में हिंदी व संस्कृत विभाग के मुखी रहे। इसके बाद वे पंजाब विश्वविद्यालय में 1970 तक डीन ऑफ फैक्लटी ऑफ आर्ट्स रहे। यही नहीं वे जम्मू विश्वविद्यालय से डीन के पद से सेवानिवृत हुए। उनकी गाइडेंस में 80 विद्यार्थियों ने पीएचडी और 15 ने डी-लिट्टेचर की डिग्री हासिल की। वे अंग्रेजी,उर्दू,पंजाबी,डोगरी और हिंदी के उदवत विद्यवान थे। उन्होंने 50 पुस्तकें लिखी हैं। हिंदी काव्य में अन्योक्ति डा.संसार द्वारा रचित एक प्रसिद्ध पुस्तक है । डॉ संसार चंद्र ने जब 89 वर्ष पूरे कर 90वें वर्ष में प्रवेश किया, तो पिछले दशक में अधूरे काम को पूरा करने का संकल्प लिया। यह पूछे जाने पर कि उन्होंने व्यंग्य को अभिव्यक्ति के रूप में क्यों चुना है, वे कहते हैं:" मैं जब कोई मेरी रोता के बारे में चिंतित के आसपास मेरे रास्ते खोज करने में कामयाब साथ था।" एक आदमी के लिए जो मीरपुर (अब पीओके में) में पैदा हुआ था और 1947 में वहां से भाग गया था, और एक गवाह और पीड़ित के रूप में नरसंहार के दौरान भी जीवित रहा, यह तप ही था जिसने उसे देखा।

उनका मानना है कि हम सब झूठ का लबादा पहनते हैं और वास्तविकता का सामना करने से इनकार करते हैं, लेकिन एक सच्चा लेखक वह होता है जो न केवल आज का बल्कि भविष्य का भी सच देखता है। सुभाष रस्तोगी, जिन्होंने 90 वर्षीय लेखक के सम्मान के प्रतीक के रूप में डॉ संसार चंद्र के श्रेष्ठ व्यंग्य को संपादित और एक साथ रखा है, उनके जीवन भर प्रशंसक रहे हैं। यह लेखक पर दूसरी किताब है, पहली किताब पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला के हिंदी विभाग के प्रमुख स्वर्गीय डॉ चंद्रशेखर ने लिखी थी।

परिणाम

संसार चंद्र को महर्षि वाल्मीकि पुरस्कार, हरियाणा सरकार का वेद व्यास पुरस्कार, हिंदी साहित्य सम्मेलन द्वारा विद्यावाचस्पति उपाधि, दो बार शिरोमणि साहित्यकार पुरस्कार (हिंदी और संस्कृत दोनों), यूपी के सौरभ सम्मान, रंगायण से चाकलस पुरस्कार,

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 5.928

| Volume 4, Issue 6, June 2021 |

महाराष्ट्र अकादमी से सम्मानित किया गया है। उन्हें लगता है कि उन्हें न केवल सरकारों और संस्थानों द्वारा बल्कि द ट्रिब्यून के पाठकों के सम्मान और स्नेह से भी पहचाना और पुरस्कृत किया गया है, जहां वे ४० से अधिक वर्षों से साप्ताहिक पूर्वानुमान लिख रहे हैं। अपने दृष्टिकोण में आश्चर्यजनक रूप से आधुनिक, वह कर्मकांड या पुराने रीति-रिवाजों के अर्थहीन पालन में विश्वास नहीं करता है। हिंदी में, वह महादेवी वर्मा और जयशंकर प्रसाद के बहुत बड़े प्रशंसक हैं, जबकि यह शेक्सपियर की सार्वभौमिकता है कि वह अपनी बात रखने के लिए बार्ड पर इकबाल की प्रशंसा करते हैं और यहां तक कि उद्धरण भी देते हैं। चश्मे आलम से तो हस्ती मस्तूर रही, मगर आलम के तेरी आंख ने उद्यान देखा। (आपने खुद को छुपाया लेकिन अपनी दृष्टि से पूरी मानवता को बेनकाब किया)। प्रत्येक अवसर और भावना के लिए, अनुभवी लेखक के पास एक उपयुक्त गीत है। संसार चंद्र से मिलने के बाद, व्यक्ति उस व्यक्ति से प्रभावित होता है, जो अपनी उम्र से प्रभावित नहीं होता, दूसरों के जीवन में धूप फैलाता रहता है और आगे देखता है और अपने अधूरे कार्यों को पूरा करने की योजना बनाता है।

निष्कर्ष

कुछ लोग अपने मुंह में चांदी का चम्मच लेकर पैदा होते हैं, और कुछ ऐसे भी होते हैं जो संघर्षों से भरे बैग के साथ पैदा होते हैं। हालांकि डॉ संसार चंद्र दूसरी श्रेणी में आते हैं, उन्होंने अपने रास्ते में आने वाली कई कठिनाइयों को दूर करने के लिए कड़ी मेहनत की और हिंदी साहित्य के क्षेत्र में अपना नाम बनाया।

उनकी पुस्तक, भारत के आदर्श महानपुरुष, भारतीय धरती पर चलने वाले महान लोगों के जीवन को दर्शाती है। उन्होंने पुस्तक को तीन भागों में विभाजित किया है। पहले भाग में, वह गौतम बुद्ध, गुरु नानक देव, गुरु गोबिंद सिंह, स्वामी विवेकानंद, स्वामी राम तीरथ और पंडित मदन मोहन मालवीय जैसे महान धार्मिक और आध्यात्मिक व्यक्तित्वों से संबंधित है। उन्होंने समाज सुधारकों के जीवन में भी तल्लीन किया है जिन्होंने सामाजिक बुराइयों को दूर करने की कोशिश की थी। पुस्तक के दूसरे भाग में, डॉ संसार चंद्र चार महान व्यक्तित्वों से संबंधित हैं: चाणक्य और राजा हर्षवर्धन से शुरू होकर, वे आपको महाराजा रणजीत सिंह और डॉ राजेंद्र प्रसाद की दुनिया में ले जाते हैं। पुस्तक का तीसरा भाग साहित्य के प्रख्यात लेखकों से संबंधित है। इनमें कालिदास, मिर्जा गालिब, रवींद्रनाथ टैगोर, मुंशी प्रेमचंद और डॉ मोहम्मद इकबाल शामिल हैं। कोई भी उनकी पुस्तकों पर अंतहीन चर्चा कर सकता है। ध्यान देने योग्य बात यह है कि उन्होंने विभिन्न विषयों पर लिखा है। विषयों को छोड़कर, छह भाषाओं पर उनका अधिकार उनके व्यक्तित्व की एक और उल्लेखनीय विशेषता है। संस्कृत और हिंदी के अलावा, उन्होंने पंजाबी, अंग्रेजी, डोगरी और उर्दू में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। एक आलोचक के रूप में डॉ संसार चंद्र के शोध कार्य को भी काफी सराहा गया है। हरियाणा सरकार ने संस्कृत भाषा और साहित्य में उनके योगदान के लिए डॉ संसार चंद्र को महर्षि वेद व्यास पुरस्कार से सम्मानित किया। उत्तर प्रदेश सरकार ने राष्ट्रीय एकता पर उनकी पुस्तक प्रमुख मुस्लिम हिंदी कवियों के लिए उन्हें सौहार्दपूर्ण सम्मान से सम्मानित किया। महाराष्ट्र अकादमी ऑफ़ बॉम्बे ने उन्हें उनके व्यंग्य लेखन के लिए चाकलस पुरस्कार से सम्मानित किया। इसी प्रकार अखिल भारतीय संस्कृत प्रचारक मंडल, दिल्ली ने उन्हें वर्ष २०११ विक्रमी के लिए विद्या-वाचस्पति की उपाधि प्रदान की; पंजाब सरकार ने उन्हें 1987-88 के लिए शिरोमणि

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 5.928

| Volume 4, Issue 6, June 2021 |

साहित्यकार (हिंदी) घोषित किया और उन्हें 1990 में 1 लाख रुपये के नकद पुरस्कार के साथ संस्कृत के लिए साहित्य शिरोमणि पुरस्कार दिया। वास्तव में, डॉ संसार चंद्र एकमात्र विद्वान हैं हिंदी और संस्कृत में उनके योगदान के लिए पंजाब सरकार द्वारा दो बार शिरोमणि साहित्यकार पुरस्कार प्राप्त किया।

संदर्भ

1. सतक सीताराम, सोन की दात
2. स्थानीय बस (निबंध) अपनी दाली के कांटा
3. सुमनरानी, इंद्रनाथ और संसारचंद्र के खिलखिलाहट निबंध
4. शशिभूषण सिंघल के साथ सौरभ
5. नरेशचंद्र शर्मा के साथ-साथ याथार्थ का स्वरूप

INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor
Impact Factor: 5.928

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

निस्केयर NISCAIR

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

IN SCIENCE, ENGINEERING AND TECHNOLOGY

9710 583 466 9710 583 466 ijmrset@gmail.com

www.ijmrset.com